रिकार्ड–ओमनमःशिवाय..... ओमशांति प्रातःक्लास 5.1.67
जब बाप और दादा ओमशांति कहते हैं दो बारी भी कह सकते हैं ;क्योंकि दो युक्तियां हैं।दूसरा है व्यक्त व्यक्ति।तो दोनों इकट्ठा कहें ,वो दोनों अलग2 कहें।दो का इकट्ठा आवाज़ भी होता है ना।यह एक वंडर है।दुनियां में यह कोइ भी नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा इनके शरीर में बैठ ज्ञान सुनाते हैं।यह कहीं भी लिखा हुआ नहीं है।बाप ने कल्प पहले भी कहा था अब भी कहते हैं कि मैं इस साधारण तन में बहुत जन्मों के अंत में इनमें प्रवेश करता हूँ।इनका आधारलेता हूँ।गीता में भी कुछ ना कुछ ऐसे वर्शन्स हैं जो कुछ रीयल भी हैं।यह रीयल अक्षर है।मैं बहुत जन्मों के भी अंत में प्रवेश करता हूँ जबकि यह वानप्रस्थ अवस्था में हों।इनके लिए कहना ही ठीक है।पहले2 सतयुग में जन्म भी इनका है।लास्ट में भी फिर इनका है।जिसमें ही बाप प्रवेश करते हैं।तो इनके लिए ही कहते हैं यह नहीं जानते कि हमने कितने पुनर्जन्म लिए हैं।शास्त्रों में 84लाख पुनर्जन्म लिख दिये हैं।यह सब है भक्तिमार्ग के गपोड़े।यह भक्तिमार्ग के गपोड़े होते ही हैं रावणराज्य में।बच्चे जानते हैं सभी गपोड़े हैं।कल्प लाखों वर्षों का है।मनुष्य की आयु 84लाख जन्म है।यह सब भक्तिमार्ग के शास्त्रों के ही गपोड़े हैं।इनको कहा जाता है भक्तिकाण्ड।ज्ञान कांड अलग है।भक्ति कांड अलग है।भक्ति करते2 उतरते ही आते हैं।यह ज्ञान तो एक ही बार मिलता है।बाप एक ही बार सर्व की सद्गति करने आते हैं।बाप आकर सबकी एक ही बार प्रारब्ध बनाते हैं भविष्य की।तुम पढ़ते ही हो भविष्य नई दुनियां के लिए।बाप आते ही हैं नई राजधानी स्थापन करने।इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है।इसकी बहुत महिमा है।चाहते हैं भारत का प्राचीन योग कोई सिखावे ;परंतु आजकल यह सन्यासी लोग बाहर जाकर गपोड़े मारते हैं कि हम प्राचीन राजयोग सिखाने आये हैं।तो वो भी समझते हैं हम सीखें।जो कि समझते हैं योग से ही पैराडाइज़ स्थापन हुआ था।बाप समझाते हैं योगबल से ही तुम पैराडाइज़ के मालिक बनते हो।पैराडाइज़ स्थापन किया है बाप ने।कैसे स्थापन करते हैं वह नहीं जानते।यह राजयोग रुहानी बाप ही सिखाते हैं जिस्मानी कोई मनुष्य भी सिखा नहीं सकते।आजकल एडलट्रेशन करप्शन तो बहुत है ना।झूठे गपोड़े ही बोलते रहते हैं।सबसे जास्ती एडल्ट्रेशन करप्शन इन गुरुओं में है।इसलिए बाप ने कहा है इन गुरूओं का साथ छोड़ो।मैं ही पतितों को पावन बनाने वाला हूँ।जरूर फिर पतित बनाने वाले तो कोई होंगे।यह गुरू लोग तो पावन सृष्टि नहीं रचते हैं।अभी तुम जज करो कि बरोबर ऐसे हैं ना।मैं ही आकर सब वेदों–शास्त्रों का सार सुनाता हूँ।इनसे अल्पकाल क्षणभंगुर सुख मिलता है।ज्ञान से तुमको 21जन्मों का सुख मिलता है।भक्तिमार्ग में है अल्पकाल क्षणभंगुर सुख।यह है 21पीढ़ी का सुख।जो बाप ही देते हैं।बाप तुमको सद्गति के लिए जो श्रीमत देते हैं वो सबसे न्यारी है।यह बाप सबकी दिल लेने वाला है।जैसे वो जड़ दिलवाला मंदिर है यह फिर है चैतन्य दिलवाला मंदिर।एक्युरेट तुम्हारी एक्टिविटी के ही चित्र बने हैं।इस समय तुम्हारी एक्टिविटी चल रही है।दिलवाला बाप मिला है सबकी सद्गति करने वाला।सबका दुःख हर सुख देने वाला।कितना उंच ते उंच गाया हुआ है।उंच ते उंच है भगवान शिव की महिमा।भल चित्रों में शंकर आदि के आगे भी शिव का चित्र दिखाया है।वास्तव में देवी देवताओं के आगे शिव का चित्र रखना तो निषेध है।वो तो भक्ति करने नहीं।भक्ति ना देवतायें कर सकते ना शूद्र कर सकते हैं ;क्योंकि सन्यासी तो शिव आदि को जानते ही नहीं हैं।वो हैं ब्रह्म ज्ञानी–तत्व ज्ञानी।जैसे यह आकाश तत्व है वैसे ही वो ब्रह्मा तत्व है।वो बाप को तो याद करते नहीं।ना उनको यह महामंत्र मिलता है।यह महामंत्र बाप ही आकर संगमयुग पर देते हैं।सर्व का सद्गति दाता वो बाप एक ही बार आकर मनमनाभव का महामंत्र देते हैं कि देह सहित देह के सब धर्म त्याग अपने को अशरीरी आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो।कितना सहज समझाते हैं।रावण राज्य के कारण तुम सब देह अभिमानी बने हो।अभी बाप तुमको आत्म अभिमानी बनाते हैं।अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करते रहो तो जो आत्मा में खाद पड़ी है वो निकल जावे।सतोप्रधान से सतो में आने से कलायें कम हो जाती हैं ना।सोने के भी कैरिटस होते हैं ना।अभी तो

कलियुग जन्म में सोना देखने भी नहीं आता है।सतयुग में तो सोने के महल होते हैं।कितना रात–दिन का फर्क है।इसका नाम ही है गोल्डन्स एज..वर्ल्ड।यह है आयरन एज्ड वर्ल्ड।वहां स्टील पत्थर आदि का काम नहीं होता।क्लिडिंग्स बनते हैं इसमें सोने–चांदी के सिवाय और किचड़पट्टी नहीं होती है।वहां साइंस से बहुत सुख है।यह भी ड्रामा बना हुआ है।इस समय साइंस घमंडी है।सतयुग में घमण्डी नहीं होते।वहां तो साइंस से तुमको सुख मिलता है।यहां है अल्पकाल का सुख।फिर इससे ही बड़ा भारी दुःख मिलता है।बाम्ब्स आदि यह सब विनाश के लिए ही बनाते ही रहते हैं।चाइना बनाते हैं ,यह मना करते हैं।फिर खुद भी बनाते रहते हैं।मनुष्यों की बुद्धि जैसे कि मारी हुई है।समझते भी हैं हमारा पति है ;परंतु पता नहीं कौन है जो प्रेरता है।हम बनाने सिवाय रह नहीं सकते हैं।....बनाने ही पड़ें।ड्रामा में नूंध है इनके विनाश की।कितना भी भल कोई पीस प्राइज़ देवे ;परंतु पीस का देने वाला एक बाप ही है।शांति का सागर।वो ही शांति ,सुख, पवित्रता का वर्सा देते हैं।सतयुग में है बेहद की.....।दूध की नदी बहती है।विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं।भेंट की जाती है।कहां वो क्षीर सागर, कहां यह विषय सागर।भक्तिमार्ग में फिर तालाब आदि बनाकर उसमें पत्थर पर विष्णु को सुला देते हैं।भक्तिमार्ग में कितना खर्चा करते हैं।कितना वेस्ट ऑफ ,वेस्ट ऑफ मनी करते हैं।देवताओं की मूर्तियां कितना खर्चा कर बनाते हैं।फिर समुद्र में डाल देते हैं।तो  पैसे वेस्ट हुये ना।बाप कहते हैं रावण ने कितना मूर्ख बना दिया है।यह है गुड़ियों की पूजा।कोई को भी इनके आक्युपेशन का पता नहीं है।अभी तुम किसी के भी मंदिर में जाओ तो तुम हर का आक्युपेशन जानते हो।बच्चों को मनाह नहीं है कहीं भी जाने की।.....आगे तो ईडियट बनकर जाते थे।अब तो सेंसिबुल बनकर जाते हो।तुम कहेंगे हम इनके 84जन्मों को जानते हैं।भारतवासियों को तो कृष्ण के जन्म का भी पता नहीं है।तुम्हारी बुद्धि में यह सारी नालेज है।नालेज सोर्स ऑफ इन्कम है।वेद–शास्त्र आदि में कोई नालेज नहीं है।स्कूल में हमेशा एम आब्जेक्ट होती है।इस पढ़ाई से तुम कितने साहुकार बनते हो।ज्ञान से होती है सद्गति।इस नालेज से तुम सम्पत्तिवान बनते हो।तुम कोई भी मंदिर में जावेंगे तो झट समझेंगे।जैसे दिलवाला मंदिर है वो है जड़।यह है चैतन्य।हूबहू जैसे यहां झाड़ में दिखाया हुआ है।वैसे मंदिर बना हुआ है।उपर भित में सारा स्वर्ग।बहुत एक्सपैंसिव बनाया हुआ है।सतयुग भी बहुत एक्सपैंसिव है ना।यहां तो कुछ भी नहीं है।भारत 100परसेंट सालवेंट पावन था। अभी भारत 100परसेंट सालवेंट पतित है ;क्योंकि विकारों से पैदाइश होती है।बाप समझाते हैं तुम 63जन्म विकारों में रहे हो।विषय सागर में गोते खाते आये हो।अभी टूमच हो गया है।जैसे बिच्छुअरी बन गये हैं।बिच्छुअरी पेट चीर कर बच्चे पैदा करती है।यहां भी यह फैशन बन गया है।पैदा भी होते हैं तो बिच्छु, नाग, बालायें।बाप कहते हैं तुम कितना खराब हो गये हो।इस समय की भेंट करते हैं।मनुष्य विषय सागर में गोते खाते रहते हैं।वहां गंदगी की बात नहीं होती।गरुड़ पुराण में रोचक बातें इसलिए लिखी हैं कि मनुष्य कुछ सुधरें ;परंतु ड्रामा में मनुष्यों का सुधरना है नहीं।वो जो धर्म स्थापक हैं उनको गुरू भी नहीं कहेंगे ;क्योंकि वो सद्गति नहीं देते हैं।वो है भक्ति मार्ग के गुरू।सद्गति दाता तो एक ही है।भारत में कितने गुरू हैं।स्त्री का पति भी गुरू कहलाता है।कहते हैं इनकी आज्ञा में तुमको रहना पड़ेगा।वो तो और ही विषय वैतरणी नदी में गिरा देते हैं।फिर गुरू कैसे ठहरे?आधा कल्प स्वर्ग में यह गंद होता नहीं।विकार की बात नहीं।वो है ही ईश्वरीय स्थापना।अभी ईश्वरीय स्थापना हो रही है।ईश्वर ही स्वर्ग स्थापन करेंगे ना।उनको ही हैविनली गॉड फादर कहा जाता है।बाप ने समझाया है वो लश्कर जो लड़ते हैं वो सब कुछ करते हैं राजा–रानी के लिए।यहां तुम माया पर जीत पहनते हो अपने लिए।जितना करेंगे उतना पावेंगे।तुम हर एक को अपने तन,मन,धन ,भारत को स्वर्ग बनाने खर्च करना पड़ता है।जितना करेंगे उतना उंच पद पावेंगे।यहां रहने का तो कुछ है नहीं।अभी

के लिए ही गायन है किसकी दबी रही धूल में .....धणी अभी आया हुआ है तुमको राज्य भाग्य दिलाने।कहते हैं अभी तन, मन,धन सब इसमें लगा दो।फालो फादर।इसने सब कुछ न्यौछावर कर दिया ना।इनको कहा जाता है महादानी।विनाशी धन का भी दान करते हैं तो अविनाशी धन का भी दान करना होता है।जितना जो दान करें।नामी–ग्रामी दानी होते हैं तो कहते हैं फलाना बड़ा फ्लैन्थरोफिस्ट था।नाम तो होता है ना।वो इन्डायरैक्ट ईश्वर अर्थ करते हैं।राजाई नहीं स्थापन होती है।अभी तो राजाई स्थापन होती है।इसलिए कम्पलीट फ्लैन्थरोफिस्ट बनना होता है।भक्ति मार्ग में गाते भी हैं हम वारी जाउंगी ,कुर्बान जाउंगी।इसमें खर्चा कुछ नहीं है।गवर्मेंट का कितना खर्चा रहता है।यहां तुम तो कुछ करते हो अपने लिए।फिर चाहो 8की माला में आओ, चाहे108में, चाहे16108 में।8में आना है पास विद आनर।ऐसा योग कमायें जो कर्मातीत अवस्था को पावें।फिर कोई सजायें ना खायें।जैसे रामचंद्र हैं ,इनको भी सजायें खानी पड़ी ;क्योंकि नापास हुये।इसलिए इनको बाण दिखाते हैं।क्षत्रिय तो हम सब ही वारियर्स हैं ना।तुम्हारी लड़ाई है रावण से।कोई मनुष्य से नहीं है।नापास होने के कारण दो कला कम हो गये।क्षत्रिय भी कहलाये और पिछाड़ी भी आये।त्रेता को दो कला कम स्वर्ग कहेंगे।पुरुषार्थ तो करना चाहिए बाप को पूरा फालो करने का।उसमें मन,बुद्धि से सरेन्डर होना होता है।बाबा यह सब कुछ आपका है।बाप कहेंगे यह सर्विस में लगाओ।मैं जो तुमको देता हूँ वो कार्य करो।यूनिवर्सिटी खोलो,सेंटर्स खोलो।बहुतों का कल्याण हो जावेगा।मैं जो तुमको मत देता हूँ वो कार्य करो।यूनिवर्सिटी खोलो।सेंटर्स खोलो।बहुतों का कल्याण हो जावेगा।सिर्फ यह मैसेज देना है बाप को याद करो और वर्सा लो।मैनेजर ,पैगम्बर तुम बच्चों को कहा जाता है।सबको यह मैसेज दो कि बाप ब्रह्मा द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।जीवनमुक्ति मिल जावेगी।अभी है जीवनबंध।फिर जीवनमुक्त हो जावेंगे।बाप कहते हैं मैं भारत में ही आता हूँ।यह ड्रामा अनादि बना हुआ है।कब बना ,कब पूरा होगा यह प्रश्न नहीं उठ सकता।यह तो ड्रामा अनादि चलता ही रहता है।आत्मा कितनी छोटी बिंदी है।उसमें यह अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है।कितनी गुह्य बातें हैं।स्टार मिसल छोटी बिंदी है।मातायें भी यहां पर बिंदी देती हैं।अब तुम पुरुषार्थ से अपने आपको राजतिलक दे रहे हो।तुम बाप की शिक्षा पर अच्छी रीति चलेंगे तो जैसे कि तुम अपने का राजतिलक देते हो।ऐसे नहीं कि इसमें आशीर्वाद वा कृपा होगी।तुम ही अपने को राजतिलक देते हो।असल में यह राजतिलक है।उतना पुरुषार्थ करना है।फालो फादर।दूसरे को नहीं देखना है।यह है मनमनाभव।जिससे अपने को आप ही तिलक मिलता है।बाप नहीं देते हैं।यह है ही राजयोग।तुम बेगर टू प्रिंस बनते हो।तो कितना अच्छा पुरुषार्थ करना चाहिए।बाप को पूरा फालो करना चाहिए।फिर इनको भी फालो करना है।यह तो समझ की बात है ना।भक्तिमार्ग तो है ही बेसमझी का मार्ग।भक्ति दुर्गति कहा जाता है ना।नालेज को दुर्गति नहीं कहा जाता है।पढ़ाई से तो कमाई होती है ना।जितना2 योगा होगा उतनी2 धारणा होगी।योग में ही मेहनत है।इसलिए भारत का राजयोग गाया हुआ है।बाकी गंगा स्नान तो करते2 कमर भी चली जाये तो भी पावन बन नहीं सकते।भक्तिमार्ग में ईश्वर के अर्थ गरीबों को देते हैं।यहां फिर खुद ईश्वर आकर गरीबों को ही विश्व की बादशाही देते हैं।गरीब निवाज़ है ना।भारत जो 100परसेंट साल्वेंट था वो 100परसेंट इनसाल्वेंट है।दान हमेशा गरीबों को दिया जाता है।बाप कितना उंच बनाते हैं।ऐसे बाप को गाली बैठ देते हैं।सो भी फिर बच्ची गालियां अनगिनत देते हैं।बाप कहते हैं ऐसी जब ग्लानी करते हैं तब मुझे आना पड़ता है।यह भी ड्रामा बनाया है।यह बाप भी है, टीचर भी है, सत्गुरू भी है।सुप्रीम फादर ,सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरू।सत को ही गुरू कहा जाता है।सिक्ख लोग भी कहते हैं सतगुरू अकाल।बाकी भक्तिमार्ग के गुरू तो ढेर ही हैं।उनमें कोई ज्ञान नहीं है।अकाल को तख्त जरूर यह मिलता है।तुम बच्चों को भी तख्त ताज करते हैं।कहते हैं मैं इसमें प्रवेश कर सबका कल्याण करता हूँ।इस समय इनका यह पार्ट है।मम्मा भी कोई के तन में जाकर सर्विस कर सकती है।ओम